BJS
Bharatiya Jain Sangathan

सामाजिक विकास में युवाओं की भूमिका

राष्ट्रीय अध्यक्ष की कलम से...

प्रिय स्वजन,

वर्ष २०१५ के शुभारंभ पर हार्दिक शुभकामनाएं !

महत्वपूर्ण वर्ष २०१४ की समाप्ति हुई। वर्षान्त में रह गये अधूरे संकल्पों को भूल जाना मानव प्रकृति है किन्तु नववर्ष का आगमन नवीन योजनाओं के संकल्प हेतु हमें प्रेरित कर रहा है। सम्पूर्ण देश प्रगति की उर्जा से ओतप्रोत होकर नई पीढ़ी के बाहूल्य के साथ युवा रूप धारण करता नजर आ रहा है। नवीन संकल्पों के साथ यह आशा अत्यंत ही दिलचस्प है कि हम सुनहरे कल की ओर अग्रसर हो रहे हैं। समाज भी परिवर्तन की प्रक्रियामयी किरणों में नहाकर आने वाले कल का स्वागत करने को तत्पर लग रहा है।

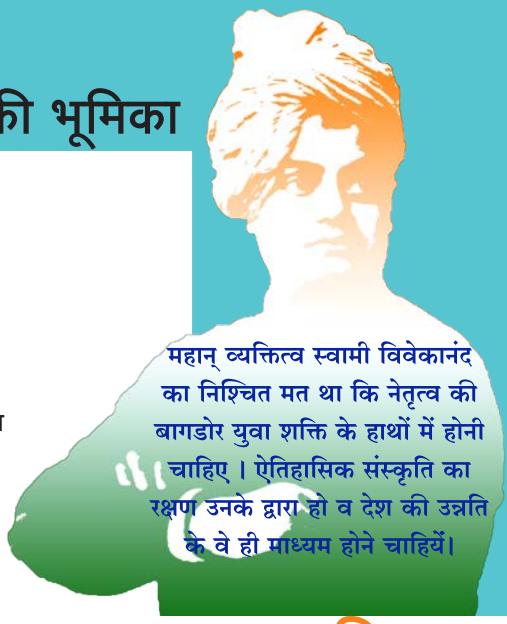

युवा दिवस १२ जनवरी

समाज व राष्ट्र निर्माण में कदम से कदम मिलाकर चलने की बी.जे.एस. की नई विचारधारा "नई पीढ़ी–नई सोच" जहां एक ओर संस्था के संकल्प को सुदृढ़ता प्रदान कर रही है वहीं दूसरी ओर युवा शक्ति के हाथों में नेतृत्व की बागडोर सही समय पर हस्तांतरित करने की योजना बलवती हो रही है। परिवर्तन यात्रा के दौरान मैंने यह महसूस किया कि युवा सशक्तीकरण पर अधिक ध्यान केंद्रित करने की आवश्यक्ता है। समग्र देश के युवा वर्ग से जुड़कर, उनकी विचारधारा को समझकर, उनकी समस्याओं पर लक्ष्य करके ही युवा पीढ़ी को समाज की मुख्य धारा से जोड़ा जा सकता है। भारतीय जैन संगठन आगामी दो वर्षों में इस विचारधारा को उद्देश्य में रूपांतरित करने हेतु संकल्प बद्ध है।

भारतीय जैन संगठन के इस प्रथम हिंदी बुलेटिन को सहर्ष प्रस्तुत करते हुए यह निवेदन करना चाहता हूँ कि हाल ही में सम्पूर्ण देश में स्वामी विवेकानंद की जन्मजयंती दिनांक १२ जनवरी २०१५ को राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनायी गयी। युवा पीढ़ी में क्षमताएं, रचनात्मक अभिगम, नऐ विचारों का सर्जन व चुनौतियों को स्वीकार करने की असीम योग्यताएं होती हैं जो देश की प्रगति के आधारभूत स्तंभ के रूप में अवलोकित होनी चाहिए। यह निर्विवादित सत्य है कि समाज व राष्ट्र निर्माण में यदि किसी की अहम् भूमिका हो सकती है तो वे कोई और नहीं, युवा ही हो सकते हैं।

किन्तु आधुनिक युग में स्वतंत्र विचारधारा की मुहिम ने एक ऐसी युवा पीढ़ी को जन्म दिया है जिन्होंने सम्पत्ति अर्जन, भौतिक सुविधाओं आदि को जीवन के आधारभूत सीमा चिन्ह मान लिया है। शिक्षण, व्यापार और यहाँ तक कि प्रेरणाओं के संदर्भ भी सीमाओं को लांघ रहे हैं। पाश्चात्य जगत आधुनिक प्रगति के परिप्रेक्ष में सकारात्मक दृष्टिकोण से अनुकरणीय माना जा रहा है। परिवर्तन की इस लहर में समाज भी एक नया स्वरूप धारण कर रहा है अत: सामाजिक संस्थाओं की कार्यप्रणाली में व्यापक परिवर्तन अनिवार्य है ताकि नित नए स्थापित हो रहे उद्देश्यों को सिद्ध करने की चुनौतियों को समाज सदस्यों के हित में स्वीकार किया जा सके। मेरा विचार है कि शिक्षण, व्यवसाय व प्रशिक्षण को वैश्विक संदर्भो में प्रक्रियाबद्ध करने की आवश्यक्ता है। मेरा मानना है कि हमें वैश्विक शिक्षण की प्रक्रिया को अपनाकर व्यावसायिक व व्यापारिक प्रशिक्षण युवाओं को देना होगा। यह भी इतना ही महत्वपूर्ण है कि अभिभावकों एवं बुजुर्गो को ऐसे पारिवारिक वातावरण का निर्माण करना होगा जिसमें वे संतानों की आकांक्षाओं को परिपूर्ण करने हेतु उनकी विचारधाराओं से समकालिक हो जायें।

भारतीय जैन संगठन विभिन्न योजनाओं एवं कार्यक्रमों के माध्यम से युवाओं की आवश्यक्ताओं की पूर्ति हेतु संकल्पित है। भारतीय जैन संगठन का युथ सेल अभी शेषव काल में है किंतु हमें विश्वास है कि आने वाले समय में यह पुख्ता स्वरूप प्राप्त करेगा व युवाओं की सहभागिता निश्चित तौर पर बढ़ती जाएगी। समाज का नेतृत्व युवाओं के हाथों में सौपनें हेतु अब हमें गम्भीरता से विचार करने की आवश्यक्ता है ।

युवाओं के व्यक्तिगत व आर्थिक सामाजिक मुद्दों पर हमें उनसे हाथ मिलाकर आगे बढ़ने की आवश्यक्ता है। मात्र आदर्शो व परम्पराओं की बात न करते हुए बदलते परिवेश में उनके साथ व्यावहारिक अभिगम अपनाने की आवश्यक्ता है। निश्चित ही हमें युवा पीढ़ी को दया, करूणा व दानवीरता के पथ पर अग्रसर करने हेतु योग्य उपायों से निर्देशित करना होगा। साथ ही, मैं आज की युवा पीढ़ी से अपेक्षा करते हुए अपील भी करना चाहता हूँ कि वे सामाजिक धरोहरों के साथ आधुनिक किन्तु संवेदनशील समाज का हिस्सा बनें ।

प्रफुल्ल पारख,
राष्ट्रीय अध्यक्ष

हमारी भावी पीढ़ी
महत्वपूर्ण केंद्र बिन्दू

युवा
अनुयोजकता

भारतीय जैन संगठन
एवं युवा शाखा

शिक्षा, पेशा व व्यवसाय वृद्धि :
आने वाली पीढ़ियों हेतु अनिवार्य केंद्र बिंदू

व्यापार एवं व्यवसाय सदियों से ही मानव प्रगति के आधार रहे हैं। हमारें पूर्वज न तो उच्चशिक्षित ही थे और न ही टेक्नोलॉजी से उनका कोई नाता रहा, इसके बावजूद अनुभवों से सीखने एवं स्वनिर्देशित होने की उनमें अपार क्षमतायें थीं। हमारें पूर्वज परिवार या गली मोहल्लों तक सीमित नहीं रहे अपितु परंपराओं एवं संस्कृति के साथ-साथ वाणिज्यिक क्षेत्रों को व्यापकता प्रदान करते रहे, यह उनकी दूरदर्शिता का द्योतक है। अनेक सीमाओं के बावजूद त्रुटिहीन व्यवसाय का उत्कर्ष ही उनकी सफलता का रहस्य था। चुनौतियों को स्वीकार करने की क्षमता व कठोर परिश्रम ही उनके व्यवसाय को प्रस्थापित करने का पर्याय रहा। हमारे पूर्वज ही हमारी प्रेरणाओं के स्त्रोत होने चाहिये, जिन्होंने बिना किसी की सहायता, सम्पत्ति व अवसरों की क्षीणता के उपरान्त भी व्यवसाय को नये आयाम देने का भागीरथ कार्य किया।

वर्तमान युवा पीढ़ी को उच्च शिक्षा, आधुनिक एवं टेक्नोलॉजीयुक्त समाज वरदान के रूप में प्राप्त हो रहा है। बदलते परिवेश में हम सभी ने यह समझा व स्वीकार किया है कि उच्चशिक्षा ही हमारी आर्थिक प्रगति एवं सामाजिक समरसता का पर्याय बन चुका है। यदि युवा पीढ़ी उच्चशिक्षा का चयन योग्य तरीकों से करे तो निश्चित ही समाज लाभान्वित होगा। 'ज्ञान ही पूंजी है' यह मंत्र आज की दुनिया में सर्वमान्यरूप से प्रस्थापित हो चुका है।

युवा पीढ़ी हेतु अपार संभावनाओं का खुला आकाश उपलब्ध है किंतु विडम्बना यह है कि उन्होंने शिक्षण एवं तकनीकी विशेषज्ञता से स्वयं को मात्र नौकरियों तक सीमित कर लिया है क्योंकि वे भौतिकवाद व व्यक्तिवादिता से ग्रसित हैं, परिणामस्वरूप वे परिवार की भावनात्मक सीमाओं में बंधना नहीं चाहते, जो आदर्श एवं सफल जीवन हेतु अनिवार्य है। युवा पीढ़ी व्यावसायिक सुरक्षा व सुविधायुक्त जीवन को लेकर भ्रमित है जबकि यह समय जोखिम व चुनौतियों को स्वीकार कर व्यवसाय की दुनिया में कदम जमाने का है। हालांकि वर्तमान युवा पीढ़ी प्रतिभावान है किन्तु अधिकांशत: इस वास्तविकता को समझने में मात खा रहे हैं कि ज्ञान व टेक्नोलॉजी के बल पर व्यापकदूरदर्शिता से सिद्धियों की लहलहाती फसल प्राप्त की जा सकती है और उनकी कल्पनाओं को वास्तविकताओं में रूपांतरित किया जा सकता है। उन्हें स्वयं की क्षमताओं पर विश्वास कर बड़ा स्वप्न देखने की आवश्यक्ता है ।

आर्थिक विकास हेतु नऐ व्यापार एवं व्यवसाय जरूरी हैं जिससे आजीविकाओं में भी वृद्धि होगी। जिन्हें उच्च टेक्नोलॉजी व अभिनव कला में महारथ हासिल है, पारंपारिक पारिवारिक व्यवसाय को नाटकीय अंदाज में नवीन स्वरूप प्रदान करने की क्षमता रखते हैं। वे ही युवा व्यापार का विकास कर सकेंगे जो जागरूकता के साथ निरंतर सीखने की इच्छा रखतें हो, जोखिम उठाना जानते हों व योग्य विकल्प के आधार पर समयोचित निर्णय लेने की उनमें क्षमता हो। जो युवा नौकरियों मे हैं उनसे अपेक्षा है कि आवश्यक अनुभव प्राप्त कर या तो वे पारिवारिक व्यवसाय से जुड़ेंगे या स्वयं अगले स्तर के व्यवसाय को स्थापित कर उन्नति के शिखर की तरफ अग्रसर होंगे।

सर्वाधिक युवा संख्या वाले इस देश की यह एक उपलब्धि ही मानी जाएगी कि आने वाले अनेक वर्षों तक नेतृत्व की बागडोर युवाओं के हाथों मे ही रहेगी। अत: दक्षता से युक्त इस युवा पीढ़ी को उद्यमी बनाकर ही आर्थिक विकास हासिल होगा। व्यापक दृष्टिकोण के साथ यह आवश्यक है कि युवा पीढ़ी वैचारिक सीमाओं को लांघकर वैश्विक बाजार में उपलब्ध संभावनाओं की खोज करे। महत्वपूर्ण यह है कि युवक एवं युवतियाँ उच्च शिक्षा व योग्य व्यवसायिक निर्णयों के साथ उनमें निहित प्रवीणता का परिपालन वैश्विक व्यावसायिक परिवेश में करें। स्वप्नदृष्टा बनकर कुछ अद्वितीय सिद्धियां प्राप्त करने का यह सुनहरा अवसर है। उद्यमियों के नये समुदायों का विकास देश में हो रहा है किन्तु जो नियोजित जोखिम लेकर नवीन विचारों एवं प्रवीणता का परिपालन करेगा वह निश्चित ही अभूतपूर्व सफलताओं का वरण करेगा। आधुनिक विश्व उर्जावान, उत्साही तथा दक्ष उद्यमियों के स्वागत हेतु सुसज्ज प्रतीत हो रहा है।

व्यापक सोच, बड़ा स्वप्न व बड़ा लक्ष्य ही हमारी युवा पीढ़ी की सफलता का मंत्र होना चाहिए। अब समय है कि हमारी नई पीढ़ी पारिवारिक व्यवसाय की जीवंतता को स्वयं की दूरदर्शिता से बदलते परिवेश के अनुरूप प्रस्थापित करे। व्यावसायिक उन्नति हेतु निरंतरता व योग्य प्रबंधन की आवश्यक्ता है और ये सभी क्षमतायें व योग्यताएं हमारी नयी पीढ़ी में निहित है।

बड़ी सोच

ज्ञान ही पूंजी है

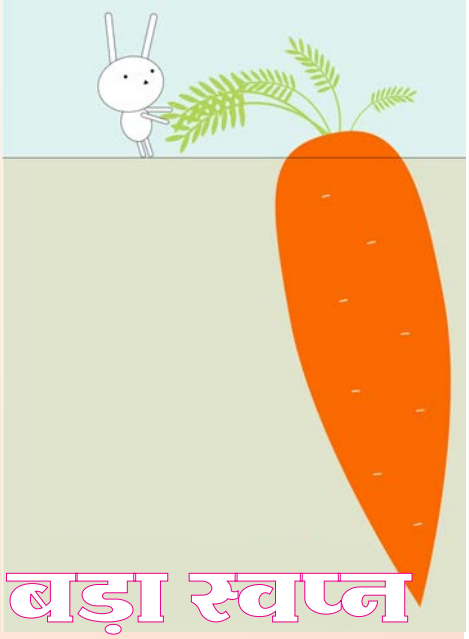

एवं बड़ी सिद्धी

सही आचरण व व्यावहारिक दक्षता से

आईये स्वप्न दृष्टा बनें :
काल्पनिक वास्तविकताओं से यथार्थ की ओर

मनुष्य सामाजिक प्राणी है और आदर्श एवं सुखी जीवन की कुंजी उसके सामाजिक बने रहने मे है। इस हेतु स्वयं से, परिवारजन्, मित्रवर्ग, समाज, कार्य, प्रकृति आदि से जुड़ा रहना आवश्यक है। किन्तु समाज में सक्रंमण की प्रक्रिया अविरत रूप से विद्यमान रहती है जो मानव जीवन की विभिन्न विधाओं जैसे- संस्कृति, शिक्षा, व्यवसाय, वैचारिकी, धर्म, राजनीति, जीवन-यापन आदि सभी पर व्यापक प्रभाव छोड़ती है। गत कुछ दशको में संक्रमण की प्रक्रिया अतितीव्र हुई है जिसका दुष्प्रभाव समाज पर स्पष्टरूप से नजर आ रहा है। यही कारण है कि समाज का विघटन निरंतर हो रहा है जिससे समाज सदस्यों में खुशहाली की भावना घट रही है वहीं दूसरी तरफ सर्वत्र तनाव का माहौल दृष्टिगोचर हो रहा है।

आज की नई पीढ़ी अब अलग ही दुनिया में जीना चाहती है। हालांकि उनके पास वो सभी सुविधाएं उपलब्ध हैं जिससे वे व्यापक या वैश्विक स्तर पर सभी से जुड़ सकते हैं। किंतु ऐसा हो नहीं रहा है अत: स्वयं में झाकने की आवश्यक्ता है।

मनुष्य के सामाजिक बने रहने में संपर्क एवं संवादिता का प्राकृतिक रूप से महत्व है। सभ्यता का उद्गम चाहे छोटे स्तर से हुआ हो किन्तु उसके सदस्यों की आवश्यक्ताओं की पूर्ति हेतु आत्मर्निभरता ही उनकी विशेषता रही। सभ्यता के विकास के साथ सीमाओं के टूटने, परस्पर निर्भरता व सहअस्तित्व की भावनाओं का विकास हुआ जिसके पीछे आवश्यक्ताओं की पूर्ति ही मूल भावना मे रही।

कुछ दशकों पूर्व तक हमारा संवाद, संम्पर्क या व्यापार उनसे ही होता था जिनसे हम परिचित थे। यह सीमाएं अब टूट चुकी हैं किन्तु सम्पंर्क एवं संवाद का तरीका ही बदल गया है क्योंकि अब एक ही परिवार के सदस्यों के मध्य सम्पंर्क या वार्तालाप उपकरणों के माध्यम से होने लगा है।

मनुष्य को पांच इंद्रियां प्राप्त होना प्रकृति का वरदान ही कहा जाएगा किन्तु ऐसा लगता है कि मोबाईल फोन इन इंद्रियों का विस्तृतीकरण ही नहीं है अपितु यह हमारी छठीं इंद्रि के रूप में स्थान ले चुका है। यह दुर्भाग्य की बात है कि टेक्नोलॉजी आधारित संवाद का अतिरेक अब हमारा विशेषकर युवा व मध्य पीढ़ी का व्यसन बन चुका है। हमारी संतानें औपचारिक संवाद को यथार्थता के रूप में स्वीकार ही नहीं कर रही अपितु यह उनकी आदत बन चुकी है जिसे हम एक गंभीर समस्या के रूप में संदर्भित नहीं कर पा रहे हैं।

इसके पूर्व कि शब्दों में निहित शक्ति, अभिव्यक्ति के फलस्वरूप ऑखों या चेहरे के भाव, जोश या आत्मीयता की अनुभूति आदि के महत्व गौण हो जायें या प्रत्यक्ष संवाद कला को हम भुला दें, हमें उपलब्ध उपकरणों को एक तरफ रखकर पुन: प्रत्यक्ष सम्पर्क एवं संवादों में उतरना होगा ।

बुजुर्ग पीढ़ी को भी नई पीढ़ी की उनकी जरूरतों, कश्मकश, संघर्ष व चुनौतियों को समझने की आवश्यक्ता है। युवाओं की दुनिया को संवेदनशीलता के साथ समझना ही परस्पर आदान-प्रदान के अवसरों को जन्म देगा। सिर्फ हिदायतें या हमारा निर्देश करना ही हमें नई पीढ़ी से दूर कर रहा है जबकि उनके आदर्श बनकर ही उनके अर्धजाग्रत मन पर सही प्रभाव छोड़ा जा सकता है। परिवार में संवेदनशील व आत्मीय संबंधों के निर्माण से ही युवा पीढ़ी की विचारधारा व आचरण में आवश्यक बदलाव लाया जा सकता है। बच्चे परिवार के बुजुर्गों को समझने व सम्मान देने लगेंगे तभी दो पीढ़ियों के बीच एकरूपता स्थापित होगी। परिवार में संबंधों की एकरूपता से ही युवा पीढ़ी को योग्य व सही समर्थन मिलेगा जो उनमें विश्वास का संचार तो करेगा ही साथ ही यहीं से प्रसन्नता व समृद्धि का पथ निर्मित होगा। हमारी युवा पीढ़ी यथार्थता की जमीन पर खडी होगी तभी सम्पर्क एवं संवाद उन सभी के साथ कर सकेगी जो परिवार, पड़ोसी या मित्रवर्गो में आते हैं तभी मनुष्य जीवन की वास्तविकताओं के प्रति सजगता का एहसास होगा।

युवा पीढ़ी का वास्तविक दुनिया की समस्याओं से परिचय ही उन्हें समस्याओं के समाधान हेतु भूमिका निर्वहन में प्रेरणादायी होगा। आधुनिकता एवं टेक्नोलॉजी के वरदानों को संवादो के माध्यम से अनुबंधित करने का कार्य परिवार व समाज में नये संबधों को जन्म देगा। आवश्यक्ता है कि हम मिलकर हमारी युवा पीढ़ी हेतु स्वप्न संजोयें। युवा वर्ग समाज की मुख्य धारा में प्रवाहित होगा तभी सामाजिक संवेदनायें, सामाजिक मूल्यों, प्रेरणायें ग्रहण करना, समानुभूति की भावना आदि उन्हें मनुष्य से इंसान बनाने हेतु कारगर होगी।

आईये! सर्वप्रथम आदर्श एवं खुशहाल परिवारों को जन्म दें एवं युवा पीढ़ी को योग्य तरीकों से निर्देशित कर उन्हें करूणामयी व संवेदनशील बनाने का प्रयास करें ताकि वे पर्याप्त रूप से सामाजिक समस्याओं के समाधान हेतु सक्षम बन सकें।

बी.जे.एस. युथ सेल:
युवाओं हेतु एक सशक्त मंच

युवा देश के भाग्य विधाता हैं। उनमें नैसर्गिक रूप से वो क्षमतायें विद्यमान हैं जो किसी भी समाज रूपी भवन की नींव को मजबूती प्रदान करने हेतु आवश्यक हैं।

युवा अवस्था से प्रारंभ की गई भारतीय जैन संगठन के संस्थापक अध्यक्ष आदरणीय शांतीलालजी मुथ्था द्वारा प्रदत्त तीन दशकों की सामाजिक एवं राष्ट्रीय सेवाएं हमारी धरोहर हैं। इस संस्था में हुए नेतृत्व परिवर्तन के हम सभी साक्षी रहे व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रफुल्ल पारख ने "नई पीढ़ी–नई सोच" को विषयवस्तु के रूप में समाजजन् के समक्ष प्रस्तुत किया। हालांकि युवाओं की धरातलीय भूमिकाओं हेतु वर्षों से चलाये जा रहे शोध एवं अनुसंधान कार्य, सशक्तिकरण कार्यक्रमों आदि से ही युवाओं की ऊर्जा को समाज व राष्ट्र निर्माण में रूपांतरित करने का रचनात्मक प्रयास भारतीय जैन संगठन द्वारा गत अनेक वर्षों से होता रहा है। हमारा विश्वास है कि प्रत्येक व्यक्ति में प्रकृति प्रदत्त क्षमतायें होती हैं जिन्हें पल्लवित कर योग्य संसाधनों के दोहन से समाज लाभान्वित होना चाहिए।

नई पीढ़ी टेक्नोलॉजी से सिद्धहस्त है, वहीं दूसरी ओर बदलते परिवेश व वैश्विकरण ने युवाओं के समक्ष अनेक चुनौतियां खड़ी की हैं जिसमे उनकी स्वयं की चिंताएं व निरंतर बदलती अपेक्षाओं को समझ पाना विकट हो गया है। इन दो खाईयों को पाटने का कार्य युवाओं द्वारा प्रभावी तरीके से समस्याओं को पहचानने व उनके समाधान खोजने की प्रक्रिया में सहभागिता से ही संभव होगा व इस हेतु युवा वर्ग का वैश्विक आर्थिक परिवर्तनों के तरफ रूख मोड़ना नितांत आवश्यक हो गया है।

युवा वर्ग की समस्याओं के समाधान स्वरूप बी.जे.एस. ने एक नया चॅप्टर युथ सेल के नाम से प्रारंभ किया है। प्रारंभिक स्तर पर युथ सेल के उद्देश्य युवा शक्ति को वह मंच प्रदान करना है जहां वे अपने प्रश्नों को प्रस्तुत कर सकें, समाधान प्राप्त कर सकें व समाज के वृहद अंग के रूप में प्रस्थापित हो सकें। संवादिता एक सशक्त माध्यम है जिससे अनेक नये विचारों को जन्म दिया जा सकता है। इस युथ सेल का प्रायोजन उस सामाजिक मंच को युवाओं को प्रदान करना है जहाँ उन्हें सामूहिक तौर पर स्वयं में क्षमताओं का विकास कर सामाजिक विषयों पर लक्ष्य करने की अर्थपूर्ण भूमिका का निर्वहन करना है।

बी.जे.एस. एक ऐसी संस्था है जिसने दशकों सें ही सामाजिक व अन्य रूपांतरणों का स्वागत किया है। समय की मांग के अनुरूप यह संस्था युवाओं को उत्तरदायी भूमिका में देखना चाहती है इसलिए अधिक युवा चेहरों को राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति में स्थान दिया गया है। हमारा अगला लक्ष्य नई युवा प्रतिभाओं को पहचानकर उन्हें सामाजिक नेतृत्वकार के रूप में प्रस्थापित करना है।

फिलहाल बी.जे.एस. युथ सेल को विभिन्न शहरों में स्थापित करने की योजना है ताकि कार्यशालाओं, सेमिनार व अन्य गतिविधियाँ जैसे – व्यावसायिक, व्यक्तित्व विकास, कॅरिअर गाईडन्स आदि का लाभ युवाओं को प्रदान किया जा सके। ये सभी युथ सेल भारतीय जैन संगठन के उन चॅप्टर के अंग होगें जो नियमित रूप से कार्यक्रमों को कार्यान्वित कर रहे हैं। हमें यह विश्वास है कि युवा शक्ति का प्रयोग समाज विकास हेतु सम्पूर्ण देश में करने का यह अभिनव प्रयास एक नए इतिहास की रचना करेगा।

वर्तमान परिवेश में युवाओं का योगदान

प्रकृति में वसंत का, ग्रहों में वृहस्पति का, तारों में सप्तर्षि का, लताओं में फूल का जो स्थान है, राष्ट्र और समाज में युवाओं का भी ऐसा ही स्थान है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात देश की आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति बहुत तेजी से बदलती जा रही है। आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति के बदलाव से मेरा आशय युवाओं के संदर्भ मे है। एक और जहाँ युवा वर्ग उच्च शिक्षा व टेक्नोलॉजी के बल पर आर्थिक प्रगति हेतु संकल्पबद्ध नजर आता है वहीं सामाजिक स्तर पर अवनति स्पष्टरूप से दृष्टिगोचर हो रही है कारण कि हमारी सभ्यता व संस्कृति हमारे पारिवारिक एवं सामाजिक मूल्यों का अब आधार नहीं रही।

यू तो १८ से ३५ वर्ष तक की अवस्था वाले लागों को युवा कहा जाता है। मेरी समझ से 'युवा सोच' ही युवा को अलग पहचान देता है। सच है कि युवा सोच ही प्रगति का मूलकारक है। नई पीढ़ी के लोगों का विचार एवं प्राचीन विचारधारा वाले लोगों के बीच मविचार मंथनफसे जो नया विचार उत्पन्न होता है, वही युवा शक्ति की सोच बननी चाहिए। युवाओं को किसी जाति, धर्म एवं सम्प्रदाय से बहुत अधिक मतलब नहीं होता है। उसका कर्म ही उसका धर्म होता है। प्राय: युवा वर्ग भगवान महावीर की वाणी को जानता है एवं मानता भी है, जो दृष्टव्य है।

शिक्षा की ललक, धर्म, व्यवसाय, खेल–कूद, राजनिति, समाज सेवा, उन्नति, एकता, दूर दृष्टि, राष्ट्र सेवा, स्वछंदता, स्वतंत्रता, नेतृत्व क्षमता आदि गुण नैसर्गिक रूप से युवाओं में विद्यमान होते हैं। बढ़–चढ़ कर युवा लोग परिस्थितियों को बेहतरीन बनाते हैं। जिसका सपष्ट उदाहरण– शांतिलालजी मुथ्था हैं जिन्होंने अपना कार्यभार युवा प्रफुल्लजी पारख को सौंपा। शांतिलालजी जिन्होंने देश काल की विपरित परिस्थिती में(भूकम्प के समय)१२०० बच्चों को गोद लिया। आज भी इनका समाज सेवा का ये कार्य अनवरत जारी है। पूर्ण विश्वास के साथ यह कह सकता हूँ कि वे भविष्य में भी युवाओं के प्रेरणा श्रोत बने रहेंगे। ईश्वर उन्हें स्वासथ्य एवं दीर्घायु प्रदान करे। यदि युवाओं में कार्य के प्रति उत्साह, अनुशासन एवं तत्परता रहे तो राष्ट्र एवं समाज तीव्र गति से प्रगति के पथ पर अग्रसर होता रहेगा। युवा समाज एवं राष्ट्र का धूरी समान होता है।

वर्तमान युग विज्ञान का युग है, जिसमें बुद्धि की प्रधानता है। कहा गया है "बुद्धि यस्य बलम् तस्य"अर्थात जिसके पास बुद्धि है उसी का शासन एवं सत्ता भी है। हमारा युवा वर्ग अपनी बुद्धि की कौशलता के बदौलत प्रगति के पथ पर अग्रसर हो रहा है। हमारे युवाओं का काम करने की मनोवृत्ति है, मनोदशा, मानसिकता और दृष्टि नवीन है। नवीन दृष्टि का प्रधान लक्षण विज्ञान के अनुकरण का भाव होता है। पूछता है जग उसी को, जिसने खुद को मिटाया है, फैलाया है, सुगंध उसी ने दी, जिसने फुल लगाया है। यदि पृथ्वी इस सृष्टि का केन्द्र है, तो मनुष्य उसका सबसे सुन्दर, विलक्षण और आलौकिक जीव है एवं युवा उस जीव का सिर मुकुट है। हर दिन, हर पल युवाओं का था, और रहेगा। युवा पर ही है युग का भार, युवा ही है युग का सार, कर्ता, कर्म और धर्म बना है युवा, जीवन को अग्रसर किया है युवा ने।

ओमप्रकाश लुणावत,
BJS National Council Member, Bangalore

युवा उर्जा का राष्ट्र व समाज के हित में उपयोग कैसे?

आकाश की ऊँचाइयों को छूना जिनका सपना हो। उताल उत्श्रृंखल समुद्र की शिखा पर चढ़ जाने का जोश हो, मात्र यही नहीं इस हेतु यथेष्ट बाहुबल, मनोबल और शारीरिक स्फूर्ति के साथ ही पैरों में बिजली सी तीव्रता हो। इसके उपरांत भी अपनो से बड़ों के लिए सम्मान, मन में आदर और छोटों के लिए हृदय में प्यार का सागर हिलोरे मार रहा हो, साथ ही, अपनी संस्कृति से प्यार करने वाले, कुछ कर गुजरने के लिए सदा बेताब ऐसे युवा किसी भी राष्ट्र एवं समाज की अमूल्य, अखुट एवं दिव्य शक्तिपूंज होते हैं। यह शक्ति स्त्रोत सृजनात्मक कार्यो को मात्र गति ही नहीं देते, अपितु वे स्वयं भी सुंदर एवं सापेक्ष सजृन की उत्कृष्ट भूमिका निभा सकते हैं।

आवश्यक यह है कि उन्हें यथेष्ट एवं उचित मार्गदर्शन निरंतर मिलता रहे। अगर उनके मार्गदर्शन में कोई त्रुटी रह जाये या हमारे प्रमाद का शिकार हो जाये तो यही शक्तिपूंज घातक एवं विध्वंसक भी बन सकता है। भटका हुआ युवा वर्ग आतंकवाद जैसी आपदाओं का सूत्रधार भी बन सकता है। यह देश के वरिष्ठ नागरिको के लिए माननीय मुद्दा है । प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता क्या? आज के विश्व की सबसे बडी त्रासदी आतंकवाद के फलने-फूलने के पीछे भटका हुआ यही युवा वर्ग ही तो कारण भूत है । अमन के दुश्मन, चंद शैतानी दिमाग कच्ची उम्र के बालको में इंसानियत के प्रति नफरत के बीजारोपण का काम करते आ रहे हैं। यही नफरत का जहर भरे पौधे दुनिया के अमन को खत्म करने का काम कर रहे हैं परिणामस्वरूप आज आतंकवाद जैसे विकराल ओक्टोपस की गिरफ्त में सारा विश्व छटपटा रहा है। हैवानियतें अपनी हदे कभी की लांघ चुकी हैं। आदमी तो आदमी, छोटे छोटे स्कूली बच्चों और अबलाओं को भी मौत के घाट उतारने से बाज नहीं आ रहे हैं। आतंकवाद का न तो कोई मजहब होता है, न दीन, न ही ईमान, बस उन्हें तो तबाही का मंजर देखकर सुकुन मिलता है।

ऐसे घातक लोगो की गिरफ्त में आ चुके इन युवाओं का कोई, यु टर्न करवा दे तो इनका राष्ट्र एवं समाज के विकास में महति भूमिका हो सकती है। आज अपने राष्ट्र की ही बात करें तो स्वंय वह अपने ही राज्यों या क्षेत्रों में पनप रहे आतंकवाद की मार निरंतर झेल रहा है। कुछ बड़े आतंकवादी हैं, तो कुछ नक्सलवादी हैं, इन सभी ने राष्ट्र को झंकझोर कर रख दिया है। आतंकवाद से जुड़े युवाओं व युवतियों को मुख्य धारा में लाने का प्रयास भी हो रहा है, पर यह तो ऊट के मुँह में जीरा के समान है।

इस समस्या का समाधान जिससे हो सकता है वह है शिक्षा जो सर्वत्र सर्व को उपलब्ध नही है, कारण सरकार की शिक्षा के क्षेत्र के प्रति उदासीनता है, यह बात देश के आम बजट से समझी जा सकती है। आजादी के ७० दशक पूर्ण होने को हैं पर आज भी अपने दस्तखत की जगह दस्तावेजों पर अंगूठा लगाने की विवशता अस्तित्व में है। निरक्षरता का इससे बड़ा उदाहरण और क्या होगा? यह स्थिति शिक्षा प्रति सरकारी उदासीनता के कारण ही तो बनी हुई है। इसी निरक्षरता के कारण देश में बेरोजगारी और बेकारी शेषनाग की तरह फन फैलायी नजर आती है।

बड़े अफसोस की बात है कि जनसंख्या की दृष्टि से विश्व का दूसरा सबसे बड़ा देश आज भी विकाशील देशों की पंक्ति में बहुत नीचे के क्रम पर आता है। देश की एक अरब जनसंख्या यानि दो अरब हाथ फिर भी स्थिति इतनी दयनीय क्यों? क्या यह विचारणीय प्रश्न नहीं है? देश में उपलब्ध इस विशाल मानव उर्जा का सफल व श्रेष्ठ उपयोग क्यों नही हो पा रहा है? क्या सब कुछ सरकार ही करेगी? सरकार है क्या? आखिर हम में से चूनिंदा लोगो का दल ही तो है। वे भी नागरिक हैं और हम भी नागरिक हैं। यदि हम उनसे देश भक्ति की उम्मीद रखते हैं, तो हम स्वंय भी तो यह काम कर सकते हैं, पर नहीं, सारे दोष सरकार के माथे मढ़कर चुप बैठना ही हमारी आदत बन गई है। देश का विकास इसी कारण ही तो बाधित हो रहा है। होना तो यह चाहिए कि हर अनुभवी व्यक्ति को अपने अनुभव आगत पीढ़ी को बाँटने चाहिए। आगत पीढ़ी को उत्तरदायी बनाने के लिए हमे अपने अनुभवो से देश के विकास मे सहभागिता करनी चाहिये जो नयी पीढ़ी हेतु प्रेरणामयी हो।

हम स्वंय अपने अपने स्तर पर राष्ट्र एवं समाज उत्थान के महायज्ञ में अपनी भूमिका निर्वहन द्वारा वरिष्ट नागरिक एवं युवाओं को यथेष्ट निर्देश दें ताकि युवा राष्ट्र एवं समाज सेवा को अपना उत्तरदायित्व समझे। पर हकीकत यह है कि यथेष्ट शिक्षा एवं सही मार्गदर्शन के अभाव में मात्र देश का ही बुरा हाल नहीं है, हमारा समाज भी पिछड़ रहा है, घर एवं परिवारों में अशांति, दाम्पत्य जीवन में क्लेश एक ज्वलंत समस्या बन रही है और समस्या का निदान कुछ भी नहीं। अगर है भी तो नहीं के बराबर।

बी.जे.एस. (BJS) जैसी और अनेक संस्थाए आज प्रभावी ढ़ंग से अपने सपरिणामी कार्यक्रमों के माध्यम से अवश्य ही कुछ समाज सुधार का प्रयास कर रही है। वे सभी साधुवाद के पात्र हैं किन्तु यह सब प्रयासों की मात्रा अपर्याप्त ही दिखाई देती है।

आवश्यक्ता ऐसी संस्थाओं से बोध पाकर समाज सेवी नई संस्थाए सामने आएं व दिल खोलकर समाज सेवा में सतत व सक्रिय भूमिका निभाकर युवा शक्ति का देश हित में पूरा उपयोग करने का काम करें। अगर ऐसा होता है तो देश एवं समाज का विकास निश्चित ही होगा। आशा करते हैं कि ऐसा ही हो। यह सोने में सुहागा जैसी बात है कि आज हमारा देश भारत युवा बाहुल्य राष्ट्र है। यह राष्ट्र के हित में शुभ संकेत है एवं बी.जे.एस. इस कार्य में सतत सक्रिय भूमिका निभा रहा है। आप सभी से निवेदन है कि सभी अपनी अपनी जिम्मेदारी जरूर निभायें।

जैन राजेन्द्र दुगड, चेन्नई
उपाध्यक्ष, बी.जे.एस.तामिलनाडु

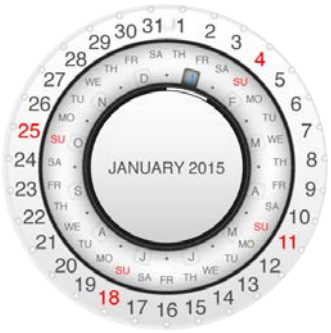

जनवरी माह की गतिविधियाँ

Program	Date	City	State	Trainer/ Resource Person/ Doctors performing surgery	Organiser
Minority (Community Awareness Lectures)	24th Jan	Arvi	Maharashtra	Dr. Sanjay Achliya	Mr. Sanjay Kshirsagar
	24th Jan	Pulgaon		Dr. Sanjay Achliya	Mr. Subhash Zanzari
	25th Jan	Wardha		Dr. Sanjay Achliya	Mr. Vinod Dhoble
	25th Jan	Hinganghat		Dr. Sanjay Achliya	Adv. Vivek Lodha
	26th Jan	Warora		Dr. Sanjay Achliya	Mr. Sanjay Poddar
	26th Jan	Chandrapur		Dr. Sanjay Achliya	Mr. Bhupendra Kochar
	24th Jan	Yavatmal		Mr. Anant Jain	Mr. Pramod Shrimal
	24th Jan	Badnera		Mr. Anant Jain	Mr. Pradeep Jain
	25th Jan	Amravati		Mr. Anant Jain	Mr. Bhansali
	25th Jan	Akola		Mr. Anant Jain	Mr. Sameep Indane
	26th Jan	Malkapur		Mr. Anant Jain	Mr. Santosh Sancheti
	26th Jan	Buldhana		Mr. Anant Jain	Adv. Dhirajkumar Gothi
	24th Jan	Jalna		Mr. Sameep Indane	Mr. Sheetal Lunkad
	24th Jan	Beed		Mr. Sameep Indane	Mr. Bipin Lodha
	25th Jan	Parbhani		Mr. Sameep Indane	Mr. Jitendra Chajed
	25th Jan	Hingoli		Mr. Sameep Indane	Mr. Ravindra Kanhed
	26th Jan	Nanded		Mr. Sameep Indane	Dr. Sandeep Raisoni
	24th Jan	Latur		Mr. Dhanraj Jain	Dr. Pradnya Shah
	24th Jan	Osmanabad		Mr. Dhanraj Jain	Mr. Gulabchand Vyavahare
	25th Jan	Solapur		Mr. Dhanraj Jain	Mr. Ketan Shah
	24th Jan	Malegaon		Mr. Kishor Desarda	Mr. Balchand Chajjed
	24th Jan	Manmad		Mr. Kishor Desarda	Dr. C H Bagrecha
	25th Jan	Chandwad		Mr. Kishor Desarda	Mr. Rajendra Dungarwal
	25th Jan	Nashik Road		Mr. Kishor Desarda	Mr. Roshan Tatiya
	24th Jan	Sangamner		Mr. Mahaveer Shrishrimal	Mr. Chandanmal Bafna
	24th Jan	Shrirampur		Mr. Mahaveer Shrishrimal	Adv. Suresh Banthiya
	25th Jan	Kopargaon		Mr. Mahaveer Shrishrimal	Mr. Jawaharlal Shah, Mr. Premshukh Bhandari
	25th Jan	Shirdi		Mr. Mahaveer Shrishrimal	Mr. Rajendra Lodha
	24th Jan	Chiplun		Mr. Mahaveer Shrishrimal	Mr. Dilip/ Mr. Rupesh Jain
	24th Jan	Khed		Mr. Rakesh Jain	Mr. Anil Jain
	25th Jan	Mahad		Mr. Rakesh Jain	Mr. Pravin Kothari
	25th Jan	Mangaon		Mr. Rakesh Jain	Mr. Rajesh Jain
	26th Jan	Pen		Mr. Rakesh Jain	Mr. Dilip Punamiya
	26th Jan	Khapoli		Mr. Rakesh Jain	Mr. Ganesh Oswal
	24th Jan	Karad		Mr. Rakesh Jain	Mr. Kantilal Parmar
	24th Jan	Sangli		Mr. Balasaheb Patil	Mr. Ashok Sakale
	25th Jan	Hadwad		Mr. Balasaheb Patil	
	25th Jan	Ratnagiri		Mr. Balasaheb Patil	Mr. Tushar Hote

जनवरी माह की गतिविधियाँ

Program	Date	City	State	Trainer/ Resource Person/ Doctors performing surgery	Organiser
Minority (Community Awareness Lectures)	13th Jan	Dewas	**Madhya Pradesh**	Mrs. Sasha Jain	Shri. Mahendra Bamb, Shri. Arpit Nahar
	13th Jan	Dewas		Mrs. Sasha Jain	Shri. Vimal Bothara
	13th Jan	Dewas		Mrs. Sasha Jain	Shri. Jaiyantilalji
	18th Jan	Nagda		Mrs. Sasha Jain	Mr. Arvind Nahar
	24th Jan	Sajapur		Dr. Sonal Mehta	Mrs. Sangita Bhandawat
	24th Jan	Ujjian		Dr. Sonal Mehta	Mrs. Kalpana Surana
	25th Jan	Sujalpur		Dr. Sonal Mehta	Mr. Hemant Jain
	25th Jan	Astha		Dr. Sonal Mehta	Mr. Lokendra Banwat
	24th Jan	Dhar		Ms. Aditi Saklecha	Mr. Pankaj Jain
	24th Jan	Badnawar		Ms. Aditi Saklecha	Mr. Mahendra Sundecha
	25th Jan	Badnagar		Ms. Aditi Saklecha	Mrs. Hemlata Godha
	24th Jan	Damoh		Dr. Vimal Jain	Mr. Subhash Bhamoriya
	24th Jan	Sagar		Dr. Vimal Jain	Mr. Suresh Jain
	25th Jan	Narsinghpur		Dr. Vimal Jain	Mr. Sunil Kothari
	25th Jan	Kareli		Dr. Vimal Jain	Mr. Pramod Kumar Jain
	24th Jan	Khandwa		Mr. Nitin Jain	Dr. Prafulla Jain
	24th Jan	Khargaon		Mr. Nitin Jain	Mr. Pravin Parakh
	25th Jan	Sanawad		Mr. Nitin Jain	Mr. Shantilal Jain
	24th Jan	Betul		Ms. Harshita Nahar	Mrs. Puja Tated
	24th Jan	Itarsi		Ms. Harshita Nahar	Mr. Rajkumar Sancheti
	25th Jan	Hosangabad		Ms. Harshita Nahar	Mrs. Neerja Faujdar
Minority (Selection of Resource Persons Program)	16th-17th Jan	Pune	Maharashtra	Shri. Prafulla Parakh, Shri. Niranjan Juva Jain	BJS HO
Empowerment of Girls	2nd-4th Jan	Nagpur	Maharashtra	Mr. Nitin Pohare	Rotary Club
	9th-11th Jan	Bhilwara	Rajasthan	Mr. Ganesh Oswal	Mr. Arvind Jhamad
	9th-11th Jan	Agra	Uttar Pradesh	Ms. Anjana Jain Ms. Bharti Singh	Mr. Manoj Jain
	14th-16th Jan	Guwahati	Assam	Ms. Manisha Bhansali	Mr. Manoj Sethia
	15th -17th Jan	Gondia	Maharashtra	Mr. Mahesh Kothari Mr. Dilip Jain	Mr. Mahesh Kothari Mr. Dilip Jain
	16th-18th Jan	Kota	Rajasthan	Ms. Rajshree Choudhary	Mr. Anil Kala
	16th-18th Jan	Ludhiana	Punjab	Mr. Amar Gandhi	Mr. Mohinder Pal Jain
	16th-18th Jan	Bhikangaon	Madhya Pradesh	Mr. Chitresh Jain	Ms. Kusum Pandya
	16th-18th Jan	Erode	Tamil Nadu	Mr. Rajendra Lunker	Mr. Rajendra Lunker
	18th-20th Jan	Gwalior	Madhya Pradesh	Mr. Abhishek Oswal	Mr.Nirmal Kothari
	23rd-25th Jan	Hyderabad	Andhra Pradesh	Mr. Amar Gandhi	Dr. Ghisulal Jain
	23th-25th Jan	Chandrapur	Maharashtra	Mr. Kushal Baldota	Gondwana University
	30th, 31st Jan & 1st Feb	Gadchiroli	Maharashtra	Mr. Amar Gandhi	Gondwana University
Business Development (Expert Sessions)	4th Jan	Ujjain	Madhya Pradesh	Mr. Rakesh Jain	Mr. Om Jain
Plastic Surgery Camp	3rd - 4th Jan	Hubli	Karnataka	Dr. Larry Weinstian & Dr. Barry Citron	BJS Hubli
	5th - 6th Jan	Kolhapur	Maharashtra	Dr. Larry Weinstian & Dr. Barry Citron	BJS Kolhapur
	7th - 10th Jan	Pune	Maharashtra	Dr. Larry Weinstian & Dr. Barry Citron	BJS
State Executive Committee Meeting	12th Jan	Mysore	Karnataka	Mr. Goutam Bafna	Mr. Prakash Jain
	15th Jan	Chennai	Tamil Nadu	Mr. Gyanchand Anchliya	Mr. Mahaveer Parmar

अल्पसंख्यक समाचार

जनवरी माह में अल्पसंख्यक लाभों की जानकारी पर महाराष्ट्र में ३८ व मध्यप्रदेश में २२ जगहों पर व्याखान होंगे। फरवरी माह मे भी ६ नगरों में, खानदेश (महाराष्ट्र) व राजस्थान में अनेक जगहों पर व्याखान होंगे। भारतीय जैन संगठन द्वारा प्रशिक्षित प्रशिक्षक उपरोक्त नगरों में अल्पसंख्यक लाभों की जानकारी देने व समाज को जागरूक करने से साथ समाजजन् से इस विषय पर बातचीत करेंगे व उनके प्रश्नों का समाधान करेगें। वे यह भी सुनिश्चित करेगें कि मिलने वाले लाभों का समाजजन् विस्तृत स्तर पर लाभ लें।

भारतीय जैन संगठन के मुख्य कार्यालय पूणे में २ दिवसीय कार्यशाला का आयोजन १६ व १७ जनवरी २०१५ को सम्पन्न हुआ जिसका उद्देश्य ऐसे प्रत्याशियों का चयन करना था जो प्रशिक्षण प्राप्त कर समाजजन् के मध्य अल्पसंख्यक लाभों की जानकारी देने मे सक्षम हों।

नव वर्ष का शुभारंभ :

अद्वितीय सिध्दी के साथ

२५ दिसंबर २०१४ गोण्डवाना विश्वविद्यालय, गडचिरोली महाराष्ट्र के साथ युवती सक्षमीकरण कार्यक्रम को इस विश्वविद्यालय के २३४ महाविद्यालयों में कार्यान्वित करने हेतु एक करार पर हस्ताक्षर किये गये। यह ऐतिहासिक करार है क्योंकि भारतीय जैन संगठन के कार्यक्रम हेतु किसी विश्वविद्यालय ने सामाजिक उत्तरदायित्वों हेतु पहल की है।

श्री महेश कोठारी, राष्ट्रीय महासचिव एवं संजय सिंघी, राष्ट्रीय सचिव भारतीय जैन संगठन इस कार्यक्रम में उपस्थित रहे। विश्वविद्यालय के प्रसिध्द् वैज्ञानिक डॉ. अनिल काकोडकर, डॉ. कीर्तिवर्धन दीक्षित वाईस चांसलर गोण्डवाना विश्वविद्यालय, डॉ. विनायक इरपते, श्री रंजीत कुमार जिलाधीश गडचिरोली की उपस्थिती ने हस्ताक्षर कार्यक्रम की शोभा बढ़ायी।

Other Update:

Parichay Sammelan (Remarriage) will be held at Indore on 15th February and at Nagpur on 22nd February 2015.

Connect with us

Watch out for all the excitement, news, views, bytes,virals on Facebook, & You Tube.
Please connect with us on : Facebook https://www.facebook.com/BJSIndia
& SHARE with your friends
We would appreciate your feedback and comments on the E- Bulletin.
Please write in to bjspune@gmail.com for your feedback

Book-Post

To,

BJS
Bharatiya Jain Sangathan
Ground Floor, Muttha Towers, Loop Road,
Near Don Bosco Church, Yerawada, Pune 411006
Tel.: 020 4120 0600, 4128 0012, 4128 0013
Website : www.bjsindia.org E mail : info@bjsindia.org
Facebook : www.facebook.com/BJSIndia